उत्तराखंड के परंपरागत ताम्रशिल्पकरो पर आधुनिकता का प्रभाव

डॉ0 रचना टम्टा

समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर चमोली, उत्तराखंड, भारत

Correspondence Author: डॉ0 रचना टम्टा

Received 1 Apr 2026; Accepted 12 May 2026; Published 29 May 2026

DOI: https://doi.org/10.64171/JSRD.5.S3.20-21

सारांश

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में व्यवसाय को परंपरागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी व्यावसायिक परंपराओं के रूप में आगे बढ़ाया गया लेकिन धीरे-धीरे परिवर्तन की क्रांति की शुरुआत में इन परंपरागत व्यवसाययों पर अपना प्रभाव डाला और धीरे-धीरे उनकी पहचान पर संकट गहराने लगा उत्तराखंड में शिल्प के परंपरागत कार्य के आधार पर अपनी पहचान बनाने वाले लोगों को शिल्पकार कहा जाता है किंतु आज यह शिल्पी आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण के फल स्वरुप अपनी पहचान के संकट से गुजर रहे हैं प्रस्तुत लेख के अंतर्गत उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल के अल्मोड़ा शहर में विलुप्त होती परंपरागत ताम्र शिल्प कला पर आधुनिकीकरण व नगरीकरण के प्रभाव को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है

मुख्य शब्द: ताम्रशिल्प, ताम्रकार, तांबा, परंपरागत

1. परिचय

उत्तराखंड का पहाड़ी राज्य समृद्ध संस्कृति और परंपरा से संपन्न है । उत्तराखंड की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू यहां के हस्तशिल्प और हथकरघा है । यह राज्य कई कुशल कारीगरों का घर है जो पारंपरिक विधियां का उपयोग करके सुंदर हस्तशिल्प बनाते हैं । ये शिल्प न केवल कला के नमूने हैं, बल्कि इनका गहरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है । उत्तराखंड में शिल्प के आधार पर अपनी पहचान बनाने वाले लोगों को 'शिल्पकार' कहा जाता है । उत्तराखंड की संस्कृति पर इनका गहरा प्रभाव है । पर्वतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्द्धन में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। कृषि कार्य के महत्वपूर्ण उपकरण, भवन निर्माण, दैनिक जीवन में प्रयुक्त महत्वपूर्ण वस्तुओं, लोकगीतों, लोकनृत्यों, लोकगाथाओ आदि में भी इनका महत्वपूर्ण अपूर्व योगदान रहा है। ये इनके आजीविका के प्रमुख साधन इनकी विशिष्ट पहचान व इनकी अभूतपूर्व कला का इनके विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि दिलाने का प्रमुख साधन हुआ करते थे। उत्तराखंड में शिल्प कला के जनक यहां के शिल्पकार हैं। यहां के प्राचीन मंदिर, इमारतें, नक्काशी, भव्य नौले यहां की जीती जागती मिशाल है, इनमें उकेरा गया शिल्प आकर्षण पैदा करने के साथ जीवंत प्रतीत होता है। लौहशिल्प, ताम्रशिल्पकला के बर्तन, वाद्ययंत्र यहां के शिल्पकारों की अद्भुत कौशल की गाथा कहते हैं। लेकिन परंपरागत शिल्पओं के आधार पर अपनी पहचान बनाने वाले यह शिल्पी वर्तमान में अपनी पहचान के संकट से गुजर रहे हैं। आज परंपरागत व्यवसायों पर आधारित इन शिल्पियों की स्थिति काफी गंभीर है क्योंकि इनके द्वारा किए गए जाने वाले कई व्यवसाय तो पूर्ण रूप से विलुप्त हो चुके हैं,कुछ विलुप्त होने के कगार पर है इन्हीं में यहां के ताम्र शिल्पकार जो तांबे का कार्य करते हैं और जिन्होंने अपने हुनर की प्रसिद्धि देश - विदेशों तक फैलायी है, आज संकट में है। इन परंपरागत ताम्रशिल्पकारों के व्यवसायों में आधुनिकीकरण व नगरीकरण का प्रभाव आदि को प्रस्तुत करना प्रस्तुत शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

उत्तराखंड में कुमाऊं मंडल का जिला अल्मोड़ा कुमाऊं का सबसे प्राचीन नगर है जिसे चंद्र शासक बालों कल्याण द्वारा 1563 में बसाया गया था। इस शहर की पहचान यहां की बाल मिठाई के अतिरिक्त तांबे के बर्तन के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है यहां तांबे का काम करने वाले शिल्पियों को ताम्र शिल्पकार कहा जाता है यह तांबे के मदद से बर्तन में अन्य दैनिक उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करते हैं और देश-विदेश में इन वस्तुओं ने काफी प्रसिद्धि पाई है इन ताम्र शिल्पियों के पास इस धातु को आकर्षक रंग-रूप में ढालने का अद्भुत कौशल है। यह उद्योग अल्मोड़ा में छावनी के निकट है। पर्वतीय क्षेत्र के ताम्र शिल्पी प्राचीन समय से ही धातु कला में सिद्धहस्त माने जाते हैं। चंद्र राजवंश के समय से यह कारीगर उत्कृष्ट तांबे के बर्तन-तौले, गागर, पराद,लोटे धार्मिक रूप से उपयोगी दीपक, शिवशक्ति, त्रिशूल आदि बना रहे हैं। यह स्थानीय तांबे के खाने से तांबा निकालने की कला में भी प्रवीण थे। इस कला को चंद राजाओं के समय सर्वाधिक संरक्षण व प्रोत्साहन मिला। चंद्र राजाओं ने इन कारीगरों की काफी कद्र की। तकनीकी व कला के क्षेत्र में भी ताम्रशिल्पी विशेषता रखते हैं। पुराने अभिलेख से पता चलता है कि पांच सौ साल पहले कात्यूरी राजवंश के जमाने में तत्कालीन कुमाऊं की राजधानी चंपावत में इन्हे बसाया गया था। इन ताम्र शिल्पियों को तब तांबे के सिक्कों को ढालने का काम दिया गया। गोरखाओं के शासन में भी इन शिल्पियों को यही काम मिला। कात्यूरी व चंद राजाओं ने इन्हें सामाजिक एवं आर्थिक रूप से फलने-फूलने दिया। इस तरह यहां यह ताम्रपात्र निर्माण का परंपरागत पेशा एक विशिष्टीकरण का रूप लेकर सारे उत्तराखंड एवं नेपाल में ताम्रपत्र निर्माण एवं व्यवसाय का केंद्र बिंदु बना। पिछली एक शताब्दी में ताम्र शिल्पकारों के परंपरागत ताम्रपात्र निर्माण व्यवसाय में बेहद उतार-चढ़ाव आये है। कुमाऊं के अल्मोड़ा, बागेश्वर में किसी जमाने में फलता -फूलता ताम्र उद्योग इन दिनों विलुप्ति की कगार में है। दो-तीन दशक पहले तक इस क्षेत्र के प्राचीन घरों में दैनिक उपयोग के तांबे के बर्तन और इस धातु से बनी आकर्षण कला-कृतियां अपनी

विशेष जगह बनाती दिखती थी लेकिन अब तांबे के बर्तनों की जगह स्टेनलेस स्टील ने ले ली तथा घरों की साज-सजा के लिए बाजार में चीन के उत्पादन अधिक सस्ती कीमत पर उपलब्ध है । आधुनिकीकरण व नगरीकरण के कारण तम शिल्पियों की आर्थिक स्थिति भी बहुत प्रभावित हुई है।

शोध का उद्देश्य

1. परंपरागत ताम्रशिल्पकला व्यवसाय पर आधुनिकरण का प्रभाव।
2. ताम्रशिल्पकारों की वर्तमान में आर्थिक स्थिति का अध्ययन।

शोध प्रारूप: प्रस्तुत शोध पत्र हेतु वर्णनात्मक एवं परीक्षणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक सूचनाओं अनुसूची के माध्यम से संकलित की गयी है।

शोध निदर्शन: अल्मोड़ा शहर के 21 ताम्र शिल्पकारों के परिवारों को "यादृच्छिक प्रतिचयन "के आधार पर लिया गया।

तालिका 1: आधुनिकीकरण व नगरीकरण के प्रभाव ने ताम्रशिल्पकारों की आर्थिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया है निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

कार्यरत परंपरागत ताम्र शिल्पकरों की आर्थिक स्तिथि	योग	प्रतिशत
बहुत अच्छी	0	0
अच्छी	0	0
सामान्य	2	9.52
निम्न	9	42.86
अति निम्न	10	47.62
योग	21	100

उपर्युक्त तालिका उन 21 उत्तरदाताओं के आधार पर बनायी गयी है जो वर्तमान में ताम्र शिल्प के कार्य से जुड़े हुए हैं जिनका चयन 'यादृच्छिक प्रतिचयन' द्वारा किया गया है। इस कार्य को करते हुए अपनी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी किसी भी उत्तरदाता ने नहीं बतायी बहुत अच्छी स्थिति में शून्यता पायी गयी। दूसरे स्थान में भी अच्छी स्थिति में किसी उत्तरदाता को नहीं पाया गया। सामान्य आर्थिक स्थिति को केवल 02 उत्तरदाताओं द्वारा बताया गया जो संपूर्ण सैंपल साइज का केवल 9.52% है । इस प्रकार इन ताम्र शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति का आकलन करते हुए निम्न आर्थिक स्थिति में 09 उत्तरदाताओं ने यानी 42.86% उत्तरदाताओं ने अपनी निम्न आर्थिक स्थिति को बताया। अति निम्न आर्थिक स्थिति में निदर्शन के सबसे अधिक उत्तरदाताओं को पाया गया जिसमें अति निम्न आर्थिक स्थिति में 10 उत्तरदाता यानी 47.62% को पाया गया। इस प्रकार उनके द्वारा बताया गया कि आज से लगभग 19 वर्ष पूर्व उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हुआ करती थी किंतु आज उनकी आर्थिक स्थिति गरीबों की सीमा से नीचे आ चुकी है।

इस प्रकार अल्मोड़ा शहर के परंपरागत ताम्र शिल्पकारों का अध्ययन करने पर पाया गया कि सामान्य रूप से पिछले 15 से 20 वर्षों में आर्थिक रूप से संपन्न व सुदृढ़ ताम्र शिल्पकारों के व्यवसाय में आधुनिकीकरण व नगरीकरण ने अत्यधिक प्रभाव डाला जिस कारण इन ताम्र शिल्पकारों को अपना परंपरागत ताम्र शिल्पकार का कार्य छोड़कर अन्य व्यवसाय को करने के लिए मजबूर किया है।

संदर्भ

1. लाल एस.के. ऑक्यूपेशनल एपीरेशन्स ऑफ सैड्यूल कास्ट स्टूडेंट इन सोशल चेंज न्यू दिल्ली, 5 ,1 एवं 2 मार्च, जून 1976, पृ.26.
2. मुखर्जी आर के एनीशिऐट इंडिया, इंडिया प्रेस 1956, पृ. 93.
3. पांडे महेश, संडे नई दुनिया,18-08-2010, पृ.27.
4. साह इला, नगरीकरण कुमाऊं की महिलाओं का बदलते दृष्टिकोण, नारी व समाज, संपादक चंद्र मोहन अग्रवाल, 2001, पृ.107.